सत्यम, ज़रा सँभल के!

समीक्षा : गरिमा गुप्ता

लेखिका : यामिनी विजयन

चित्रकार : विष्णु एम नायर

उम्र : 4 से 8 वर्ष

पृष्ठ संख्या : 21

भाषा : अँग्रेज़ी (48 अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध)

प्रकाशक : प्रथम बुक्स

सत्यम, ज़रा सँभल के! बड़ी दिलचस्प कहानी है। इस कहानी का नायक सत्यम असीम ऊर्जा से भरा हुआ है। अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तरह, सत्यम भी एक जगह टिककर नहीं रह सकता। वह अपने आस-पास की दुनिया का पता लगाने के लिए उछलता है, दौड़ता है, रेंगता है, फिसलता है, छलाँग लगाता है, और झूलता है। यह कहानी सरल वाक्यों में कही गई है जो पाठकों के सामने एक मज़ेदार और चंचल विवरण प्रस्तुत करती है।

कहानी की समृद्ध कल्पना और चित्रण ध्यान आकर्षित करते हैं। साथ ही कहानी में आगे क्या होगा, इस बारे में सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। ये चित्रण न केवल नन्हे पाठक की शब्दावली के विकास में सहायक हैं, बल्कि उसे रचनात्मकता और कल्पना की दुनिया में गोते लगाने की भरपूर प्रेरणा भी देते हैं। पाँच वर्ष के बच्चे के जीवन के महज़ एक प्रसंग को प्रस्तुत करने से परे जाते हुए, यह कहानी उस सामान्य अवधारणा को भी कुशलता से बताती चलती है जिसे बच्चे कक्षाओं में अपनी सजग भागीदारी के दौरान सीखते हैं। मसलन, पशु और उनकी गतिविधियाँ। इसके अलावा, लेखिका की लेखन शैली और शब्दों का चयन इस पुस्तक को प्राथमिक कक्षाओं के लिए एक मूल्यवान संसाधन बनाता है, विशेष रूप से क्रिया-शब्दों और उपमाओं को पढ़ाने के लिए।

यह कहानी दर्शाती है कि शारीरिक खेल और जिज्ञासा के जो गुण आमतौर पर बच्चों में शुरुआती वर्षों में देखे जाते हैं, उनके माध्यम से यह पाँच वर्ष का बच्चा, सत्यम कैसे सीखता जाता है। कहानी गति संवेदनों के माध्यम से सीखने के महत्त्व को स्वीकार करती है, और बड़ों को इस बात की याद दिलाती है कि बच्चों का घूमना-फिरना, अपने शरीर और गतिविधियों के साथ प्रयोग करना, आदि उनके विकास के लिए स्वाभाविक और बुनियादी है। यह कहानी बड़ों को याद दिलाती है कि इन वर्षों के दौरान बच्चों की गतिशीलता और खोज करने की प्रवृत्ति को दबाना नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें सँजोया और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

यह कहानी बच्चों के लिए इस लिहाज़ से भी अर्थपूर्ण है क्योंकि सत्यम के ज़रिए यह उन्हें स्वयं को देखने के लिए प्रेरित करती है जिसमें उनकी अपनी ऊर्जा, प्रेरणाएँ, आवेग, कल्पनाएँ, आदि शामिल हैं। सत्यम के साथ बच्चों की आत्मीयता इसलिए होती है, क्योंकि कहानी उनकी अपनी स्वतंत्रता, रोमांच और संवेदी अनुभवों की तीव्र इच्छा को मान्यता देती है। कहानी में "वह मकड़ी की तरह झूलता है और लंगूर की तरह उछलता है" जैसे वाक्य और दृष्टान्त मिलते हैं जिनके चलते यह बच्चों के मन में प्राकृतिक दुनिया के प्रति विस्मय की भावना और अपने शरीर में निहित अनन्त सम्भावनाओं के प्रति जिज्ञासा की भावना जगाती है।

यह कहानी बच्चों के जीवन से जुड़े वयस्कों के बारे में भी बात करती है तथा बच्चों की क्रियाओं के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं को भी रेखांकित करती है। सत्यम के जीवन में अप्पा, अक्का, ताता, शिक्षक, अम्मा, आदि जैसे जो बड़े लोग हैं, वे सभी उसके उत्साह पर अलग तरह से प्रतिक्रिया करते हैं। जब घर के बड़े सत्यम को चुपचाप बैठने या कुछ भी न तोड़ने के लिए कहते हैं तो कहीं-न-कहीं यह कहानी उन्हें इस बात की चुनौती देती है कि वे अपनी प्रतिक्रियाओं, और बच्चों को लेकर उनके मन में जो अपेक्षाएँ हैं, उन पर पुनर्विचार करें। इसके अलावा, यह वयस्कों से इस बात का आग्रह भी करती है कि वे बच्चों को हमेशा ठीक करने में न लगे रहें, बल्कि यह बताएँ कि जो वे कर रहे हैं वह उन्हें स्वीकार्य है, और वे उनके साथ मिलकर चीज़ें करें। ऐसा करने से बड़ों को बच्चों के जीवन को समझने का अवसर मिलता है। वे जान पाते हैं कि बच्चों को चलने-फिरने से आनन्द मिलता है, और यदि वे इसके लिए उन पर रोक-टोक लगाते हैं, या उन्हें ग़लत समझते हैं तो बच्चे निराश हो जाते हैं। इस प्रकार यह कहानी इस विचार को तवज्जो देती है कि बड़े, बच्चों के दृष्टिकोण, इच्छाओं और लालसाओं को पहचानें, उनका सम्मान करें और उन पर प्रतिबन्ध लगाने के बजाय करुणा, समर्थन और धैर्य के साथ पेश आएँ। कहानी सिर्फ़ बड़ों का मार्गदर्शन ही नहीं करती, बल्कि उन्हें बताती है कि वे बच्चों को स्वस्थ जोख़िम उठाने के लिए प्रोत्साहित करें। ऐसा करने के लिए माँ (अम्मा) के प्यार भरे, देखभाल भरे जवाबों का हवाला दिया गया है। मसलन, "मज़बूत शाखाओं को पकड़ो, मेरे छोटे बन्दर"; "कीचड़ बहुत चिपचिपा है। सावधान रहो!"; आदि।

यह हमें बच्चों के दुनिया से जुड़ाव के अस्त-व्यस्त तरीक़ों में भी अर्थ तलाशने के लिए प्रोत्साहित करती है। कहानी बच्चों के लिए सुरक्षा और आज़ादी के बीच सन्तुलन बनाने वाले वयस्कों के प्रति समानुभूति पैदा करती है, और इस बात के महत्त्व पर ज़ोर देती है कि हँसने, कहानी सुनाने और साझा पल बिताने से बच्चों के साथ जुड़ाव बनता है।

शिक्षक, इस कहानी के ज़रिए, बच्चों को सत्यम की तरह ही अलग-अलग गतिविधियों में शामिल कर सकते हैं। उनकी शारीरिक क्षमताओं की खोज और विकास करते हुए, उन्हें खेल-खेल में उपयुक्त शब्दावली का उपयोग करके विभिन्न जानवरों की गतिविधियों के बारे में सिखा सकते हैं। इस प्रकार, इस कहानी का उपयोग बच्चों के शारीरिक, भावनात्मक, भाषाई और संज्ञानात्मक विकास को पोषित करते हुए उनके समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

गरिमा गुप्ता अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु के शिक्षा संकाय की सदस्य हैं। वे शिक्षकों के पेशेवर विकास, समावेशी शिक्षा और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

रेलगाड़ी चले छुक-छुक

समीक्षा : कमलेश चन्द्र जोशी

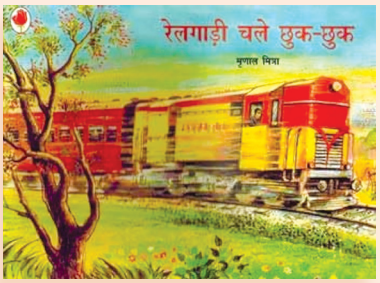

लेखिका : मृणाल मित्रा

उम्र : 4 से 6 वर्ष

पृष्ठ संख्या : 16

भाषा : हिन्दी, अँग्रेज़ी

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली

यात्राएँ हम सबको हमेशा याद रहती हैं। कुछ यादें धुँधली पड़ जाती हैं, कुछ ताज़ा रहती हैं। हम कहाँ गए थे; किस माध्यम से गए थे; किसके साथ गए थे; वहाँ क्या-क्या देखने को मिला था; किससे मिले; क्या ख़ास घटना घटी थी; ये सभी अनुभव हमारी स्मृतियों में रह जाते हैं। और जब हमको मौक़ा मिलता है, ये अनुभव किसी को बताना भी चाहते हैं। छोटे बच्चों के साथ काम करते हुए उन्हें इस तरह के मौक़े मुहैया कराने पड़ते हैं जहाँ वे अपने अनुभव साझा कर सकें। इससे उन्हें अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है और उनका भाषाई विकास भी होता है। बच्चों के लिए छोटी-छोटी चित्रकथाएँ इस तरह के मौक़े ख़ूब प्रदान करती हैं। आवश्यकता होती है बच्चों के लिए सहज व जीवन्त किताबों को तलाश करने की जो उनसे सहज ही जुड़ जाएँ, और उनके अनुभवों को समृद्ध कर सकें।

आँगनवाड़ी केन्द्र में आने वाले बच्चों के सन्दर्भ में एक महत्त्वपूर्ण अपेक्षा यह रहती है कि उनके मौखिक भाषा कौशल का विकास हो। इसके लिए उन्हें बातचीत करने, अपने अनुभवों को व्यक्त करने के मौक़े देने की आवश्यकता होती है। बच्चे अपने मौखिक भाषा विकास के लिए अधिकाधिक अभ्यास कर पाएँ, इसलिए केन्द्र में इसके अवसर बनाने पड़ते हैं। इस काम को करने के लिए चित्रकथाएँ काफ़ी उपयोगी होती हैं, और इनके माध्यम से बच्चों से बातचीत की जा सकती है। चित्रकथाओं की किताबें भी कई तरह की होती हैं। किसी में छोटी कहानी या कविता लिखी होती है, वहीं कुछ में बच्चों के आस-पास के परिवेश की जानकारी होती है। इसके अलावा, कुछ चित्र किताबें ऐसी होती हैं जिनमें केवल चित्र में कही कहानी ही होती है। ऐसी किताबों में सोचने के लिए ज़्यादा खुलापन होता है, और बच्चों के लिए अपने अनुभव जोड़ने के ज़्यादा मौक़े होते हैं। वे अपने अनुभवों से अपनी-अपनी कहानी बना सकते हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित व मृणाल मित्रा द्वारा चित्रांकित किताब *रेलगाड़ी चले छुक-छुक* सिर्फ़ चित्रों में रची गई किताब है। वैसे तो यह बहुत नई किताब नहीं है, लेकिन बच्चों के साथ बातचीत के लिहाज़ से बहुत उपयोगी है। जब हम इसके आगे व पीछे के कवर पेज को पूरा खोल देते हैं तो पूरी किताब खुल जाती है। चित्र में एक लम्बी-सी रेलगाड़ी दिखाई देती है, और किताब पढ़ने वाले को एक चलती हुई रेलगाड़ी का एहसास होता है। चित्र देखने पर पता चलता है कि किताब में एक बच्चे का अपने माता-पिता के साथ यात्रा का अनुभव है। दिए गए चित्रों से ही छोटे बच्चों की रेलगाड़ी से की गई यात्रा के अनुभवों की खिड़कियाँ खुल जाती हैं।

ऐसा अनुभव बच्चों के पास होता है जिसमें उन्हें रोज़मर्रा के जीवन के विभिन्न क्रियाकलापों के चलते अपने माता-पिता के साथ बाहर जाने का मौक़ा मिलता है। यह अलग बात है कि वे रेलगाड़ी से गए हैं या बस से। यहीं प्रयाग शुक्ल की छोटे बच्चों के लिए लिखी कविता 'रेल चली, भई रेल चली' भी याद आ जाती है। किताब पर बातचीत करते हुए उसे भी बच्चों को सुनाया जा सकता है।

जब किताब पढ़ना शुरू करते हैं तो उसमें स्टेशन पर एक बच्चा और उसके माता-पिता दिखाई देते हैं। बच्चों के साथ बातचीत की शुरुआत इस चित्र से की जा सकती है। आगे के चित्रों को बच्चों के मनोभावों के अनुरूप रचा गया है जिनमें बच्चा खिड़की के पास

बैठा हुआ बाहर के दृश्यों को देख रहा है। आम सफ़र में बच्चों की खिड़की के पास बैठने की ज़िद हम सबके अनुभवों का हिस्सा है जो उनकी स्वाभाविक जिज्ञासु प्रवृत्ति को दर्शाती है। उसके सामने एक दादा-दादी भी बैठे हुए हैं। आगे के चित्र में रेलगाड़ी के अन्य यात्रियों, उसके किसी सुरंग से गुज़रने का भी दृश्य है जिसमें थोड़ा अँधियारा भी दिखाई पड़ता है। इन सभी चित्रों पर उनसे अच्छी बातचीत भी की जा सकती है, और उन्हें अपने अनुभवों को जोड़ने को कहा जा सकता है। बातचीत के लिए कुछ प्रश्न ये हो सकते हैं–

यह रेलगाड़ी कहाँ जा रही होगी?

क्या तुम भी कभी रेलगाड़ी में बैठे हो?

कहाँ-कहाँ गए हो?

किसके साथ गए हो?

इस किताब में किसकी कहानी होगी?

खिड़की के पास बैठे बच्चे का क्या नाम होगा?

इस बच्चे की जगह तुम बैठे होते तो क्या करते?

अगले पेज पर चित्र में क्या दिखाई देगा? आदि।

इस बातचीत में बच्चों के अलग-अलग जवाब मिलेंगे जो उनकी अभिव्यक्ति को प्रकट कर रहे होंगे। यह इस किताब की विशेषता है कि इसमें एक बनी-बनाई कहानी निर्मित नहीं होती। बच्चे अपने अनुभवों से अपनी कहानी बता सकते हैं।

आँगनवाड़ी के बच्चों के साथ बातचीत करने के लिए हमेशा कुछ अच्छी किताबों की ज़रूरत होती है। यह एक खरी किताब है, और बच्चों को बातचीत करने के ख़ूब मौक़े दे सकती है। बातचीत के दौरान यह किताब घूमने जाने के ऐसे सभी अनुभवों से जुड़ जाती है। किताब के रंग-बिरंगे चित्र बच्चों से बहुत कुछ बतियाते हैं। चित्रों में प्लेटफ़ॉर्म व डिब्बों के दृश्य, तरह-तरह के लोगों और चीज़ों के हाव-भाव की जीवन्तता देखते ही बनती है। रेलगाड़ी की खिड़की से दिखाई देने वाले दृश्य बच्चों को अपने अनुभव जोड़ने का मौक़ा देते हैं।

यह एक शिक्षक के कौशल का कमाल है कि वह किस तरह इस किताब का प्रस्तुतीकरण बच्चों के साथ करता है, और उनका इससे जुड़ाव बनाता है।

कमलेश चन्द्र जोशी विगत 30 वर्षों से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के साथ भाषा शिक्षण, विद्यालय पुस्तकालय, शिक्षक प्रशिक्षण, आदि को लेकर गहराई से काम किया है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में कार्यरत हैं।